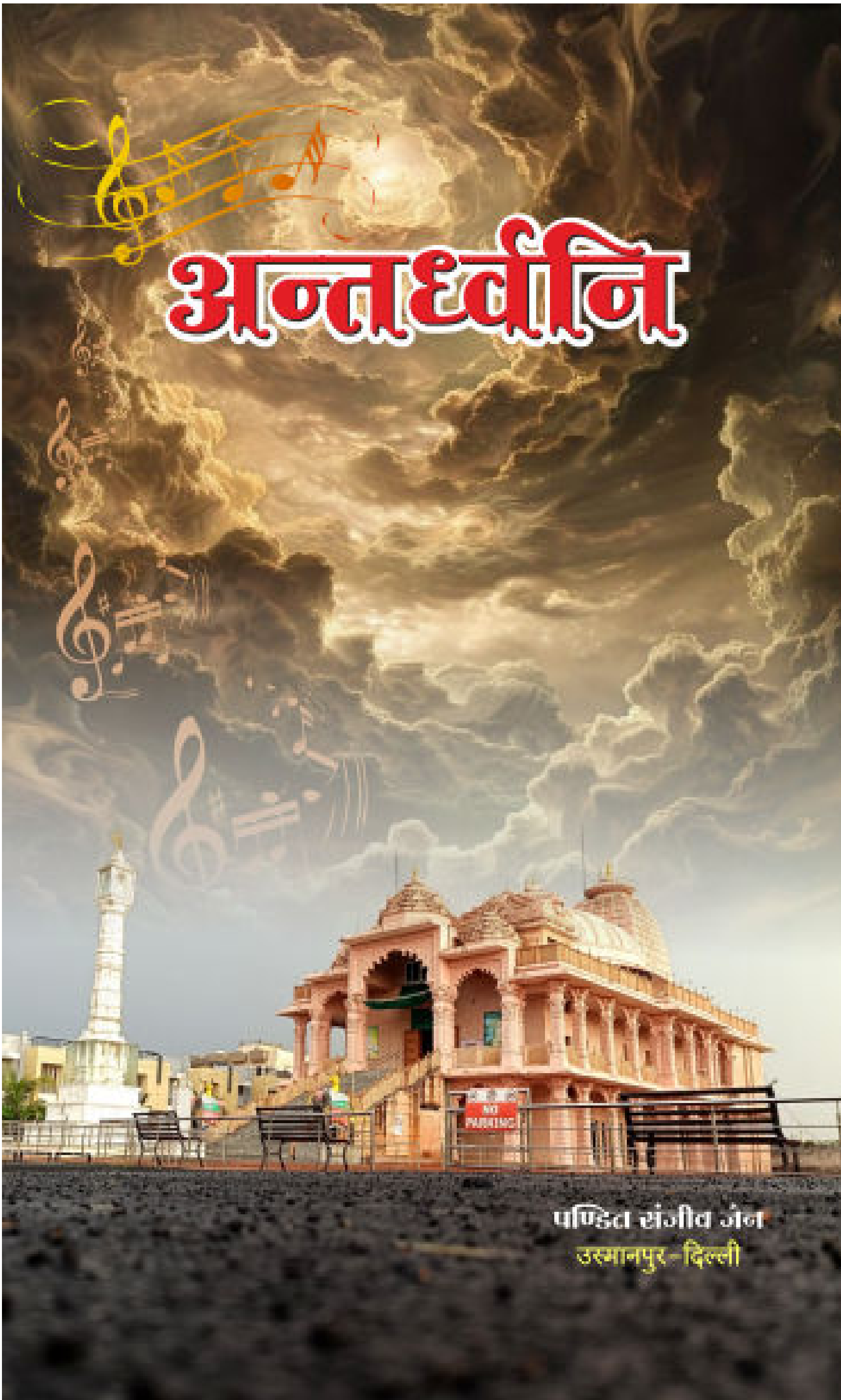

Created by Universal Document Converter

पंचमेरू

समवशरण

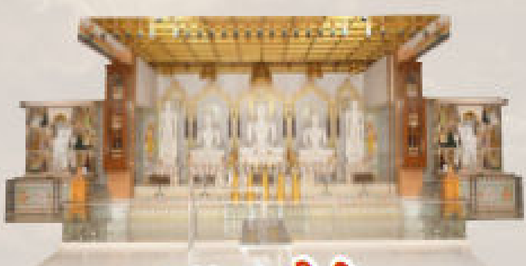

मुख्य वेदी

Created by Universal Document Converter

श्री ज्ञानोदय ग्रन्थमाला अन्तर्गत : चतुर्थ पुष्प

आध्यात्मिक भजन संग्रह

अन्तर्ध्वनि

रचनाकार/संकलनकर्ता

पण्डित संजीव जैन

उस्मानपुर, दिल्ली

प्रकाशक

श्री कुंदकुंद कहान दि. जैन ट्रस्ट

तीर्थधाम ज्ञानोदय, दीवानगंज, भोपाल

Created by Universal Document Converter

प्रथम संस्करण : 1500 प्रतियाँ (दशलक्षण महापर्व-2024)

प्राप्ति स्थल : 1. **तीर्थधाम ज्ञानोदय**
अमित 'अरिहन्त'
विदिशा-भोपाल रोड, दीवानगंज, जिला रायसेन-464651
मो. 8442074031
: 2. **अशोक जैन 'सुभाष ट्रान्सपोर्ट'**
ई-2/103, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9425613096

मूल्य : स्वाध्याय
लागत मूल्य : 20 रुपये

प्रकाशन सौजन्य
श्री प्रेमचंदजी-सुलोचनाजी जैन
श्री अनिलजी-अंजलीजी जैन, पथरिया
जिला-दमोह (म.प्र.)

मुद्रक : देशना कम्प्यूटर्स
जयपुर (राजस्थान)
मो. 9928517346

Created by Universal Document Converter

प्रकाशकीय

भक्ति एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसमें भक्त, भगवान और भक्ति का समन्वय होता है। भक्ति की जैन साहित्य में एक समृद्ध परंपरा रही है। आचार्य कुंदकुंद देव ने दशभक्ति नाम से प्राकृत में भक्ति साहित्य की रचना की है। भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र भक्ति के अद्भुत उदाहरण हैं। जैनाचार्यों ने भक्ति में गहरे रहस्यों को उद्घाटित किया है। भक्ति में मात्र भगवान की भक्ति ही नहीं बल्कि उनके द्वारा प्रतिपादित वस्तुस्वरूप की गहरी और सूक्ष्म व्याख्या का समायोजन है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भक्ति के स्तोत्र पूजन, विधान आदि भी स्वाध्याय का ही अंग है। पूर्वाचार्यों की परंपरा का अनुसरण करते हुए प्राचीन कवि विद्वानों में पंडित भूधरदासजी, पंडित बुधजनजी, पंडित दौलतरामजी, पंडित बनारसीदासजी आदि ने भक्तिरस में निमग्न होकर अनेक काव्यों की रचना की है, जिन्हें आज आत्मार्थी समाज प्राय: गुनगुनाया करती है।

हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है कि 'श्री ज्ञानोदय ग्रंथमाला' के अंतर्गत आत्मार्थी विद्वान श्री संजीवजी उस्मानपुर द्वारा विरचित आध्यात्मिक गीतों का संग्रह 'अंतर्ध्वनि' पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं, जिसका आत्मार्थी समाज को भरपूर लाभ प्राप्त होगा।

प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन में **श्री प्रेमचंदजी, श्री अनिलजी पथरिया का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ** हम उनके आभारी हैं। पुस्तक के रचनाकार पंडित श्री संजीवजी उस्मानपुर जिन्होंने यह भजनों का संग्रह प्रकाशन हेतु हमें अपनी स्वीकृति प्रदान की उनका भी धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। पुस्तक के सुंदर मुद्रण हेतु देशना कम्प्यूटर्स (दिनेश शास्त्री) जयपुर एवं तीर्थधाम ज्ञानोदय के सह निदेशक अमित 'अरिहंत' के विशेष सहयोग हेतु भी हम उनके हृदय से आभारी हैं।

हमारी ऐसी भावना है कि श्री ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अंतर्गत अप्रकाशित व अनुपलब्ध ग्रंथों का प्रकाशन हम ट्रस्ट के द्वारा करें। ग्रंथमाला अंतर्गत पूर्व में ट्रस्ट द्वारा आचार्य देवसेन कृत श्रुतभवन दीपक नयचक्र, ग्रंथाधिराज समयसार जी (उभयटीका), ज्ञानोदय पूजांजलि आदि ग्रंथों का प्रकाशन किया जा चुका है। आचार्य भास्करनंदी कृत तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ की संस्कृत टीका भी प्रकाशनाधीन है। इसी श्रृंखला में यह चतुर्थ पुष्प के रूप में अंतर्ध्वनि पुस्तक का प्रकाशन भी हम आपको समर्पित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

अत: आप सभी प्रस्तुत प्रकाशन का भरपूर लाभ लें, ऐसी हम मंगल भावना व्यक्त करते हैं।

– **अशोक जैन 'सुभाष ट्रांसपोर्ट'**

अध्यक्ष – तीर्थधाम ज्ञानोदय, दीवानगंज, भोपाल

Created by Universal Document Converter

तीर्थधाम ज्ञानोदय : एक परिचय

अनंत केवली भगवंतों की परंपरा में जो शाश्वत वस्तु-स्वरूप, वर्तमान शासक नायक भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित, गणधर भगवानों द्वारा ग्रथित, आचार्य भगवंतों द्वारा जिनवाणी में लिपिबद्ध, ज्ञानी गुरुओं के द्वारा अनुभूत और वर्तमान में आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा उद्घाटित वीतरागी तत्त्वज्ञान, जन-जन के हृदय का हार बने, जिसका पान कर भविक जीव, संसार-चतुर्गती-परिभ्रमण को टालकर मुक्तिवधु का वरण करें। इस पवित्र भावना से भोपाल एवं विदिशा के ममुक्षु साधर्मियों की उत्कट भावना के फलस्वरूप संपूर्ण देश भर की दिगंबर जैन मुमुक्षु समाज के सहयोग से भोपाल-विदिशा राजमार्ग पर दीवानगंज के निकट तीर्थधाम ज्ञानोदय की स्थापना हुई है।

पूज्य गुरुदेवश्री की मंगल उपस्थिति में भोपाल शहर में दो वेदी-प्रतिष्ठाएँ (चौक मन्दिर एवं टीटी नगर जिनालय) तथा एक पंचकल्याणक महोत्सव, पिपलानी में अतिभव्यता के साथ सम्पन्न हुए। एतदर्थ सम्पूर्ण भोपाल की मुमुक्षु समाज की अत्यन्त तीव्र भावना थी कि देश भर के अनेक केन्द्रों के समान भोपाल के निकट भी एक आध्यात्मिक केन्द्र निर्मित हो, जो गुरुदेवश्री के प्रभावना योग में जिन-शासन की पताका को विश्व भर में फैलाने का कार्य कर सके; अतः नवम्बर 2010 में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट भोपाल का गठन कर, 05 दिसम्बर 2010 के शुभ दिन भूमि क्रय एवं शिलान्यास सम्पन्न कर, 'तीर्थधाम ज्ञानोदय' के निर्माण का संकल्प लिया गया।

पश्चात् ट्रस्ट के सतत प्रयासों से देशभर के हजारों साधर्मी भाई-बहिनों की मंगल उपस्थिति में दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2017 तक पाषाण से परमात्मा बनने के महान उत्सव 'पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव' सम्पन्न कर ज्ञानोदय तीर्थधाम में मनोहारी जिन-बिम्ब विराजमान किए गए।

तीर्थधाम ज्ञानोदय के प्रवेश द्वार के निकट अति सुंदर भव्य मानस्तंभ में तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान के भावमयी 8 जिनबिंब विराजमान हैं; उनके ठीक सामने अतिभव्य जिन-मंदिर के प्रथम तल पर मूलनायक 1008 तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान के साथ पंच बालयति तीर्थंकर एवं 24 तीर्थंकर भगवंतों के वीतरागी जिन-बिंब विराजमान हैं।

द्वितीय तल पर समवसरण जिनालय में चार कल्याणकों से विदिशा नगर को पवित्र करनेवाले श्री 1008 शीतलनाथ भगवान विराजमान हैं एवं श्वेत पाषाण से निर्मित 'पंचमेरु एवं गजदन्त जिनालय' में विराजमान अकृत्रिम जिन-बिम्ब भी दर्शनार्थियों के मन को मोह लेते हैं। भूतल पर विशाल स्वाध्याय भवन है, जिसमें निरन्तर स्वाध्याय एवं शिक्षण की गतिविधियाँ संचालित होती रहती हैं।

Created by Universal Document Converter

श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय : एक परिचय

मूर्तिमान जिनदेव के साथ-साथ उनके द्वारा प्रदत्त वाणी को आत्महित एवं जन-जन की वस्तु बनाने के उद्देश्य से ट्रस्ट द्वारा 'श्री ज्ञानोदय, दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय' की स्थापना 8 जुलाई 2018 को अनेक गणमान्य आध्यात्मिक, प्रशासनिक और सामाजिक सम्मान्नीय व्यक्तियों की उपस्थिति में हुई। इसके अन्तर्गत आवासीय सुविधा प्रदान करके दसवीं कक्षा के उपरान्त जैनदर्शन के विशद अध्ययन हेतु उच्चकोटि का विद्वान बनने की भावना से प्रवेश दिया जाता है। अभी वर्तमान में यहाँ 45 छात्र अध्यनरत हैं, सत्र 2022-23 में महाविद्यालय का 16 विद्यार्थियों की शिक्षा दीक्षा के अंत के साथ प्रथम दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ, जिसमें से 05 विद्यार्थी मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग की तैयारी ट्रस्ट के विशेष सहयोग से कर रहे हैं व शेष विद्यार्थी भी अपनी-अपनी रुचि अनुसार आगामी अध्ययन करते हुए यथायोग्य सदाचारमय जीवन जीते हुए तत्त्व प्रभावना में अपना उल्लेखनीय योगदान कर रहे हैं।

हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को उच्चतम शैक्षणिक अध्ययन के अवसरों के साथ-साथ जीवनोपयोगी आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के संस्कार प्रदान कर जैनदर्शन का विशिष्ट प्रामाणिक अध्येता विद्वान् बनाना है।

यहाँ विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर के अभिवर्धन हेतु उन्हें भारत सरकार द्वारा संचालित 'केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल' (मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित) से जैनदर्शन विषय में शास्त्री उपाधि प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, जो कि शिक्षा जगत में अन्य विश्वविद्यालयीन स्नातक पाठ्यक्रमों के समतुल्य ही है।

साथ ही जैन तीर्थंकरों की सनातन परम्परा द्वारा प्रणीत आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को आत्मसात् करने हेतु छात्रों को 'वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ज्ञानोदय महाविद्यालय' के आधार पर निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार विविध कक्षाओं के द्वारा अध्ययन का अवसर मिलता है।

विद्यार्थियों को पाँच वर्षों में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में 12 आगम ग्रन्थों एवं टीकाओं का और ज्ञानोदय महाविद्यालय में चारों अनुयोगों के 28 ग्रन्थों कुल मिलाकर छोटे-बड़े 40 ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है।

शास्त्री उपरान्त विद्यार्थियों को उनकी अभिरुचि एवं योग्यता के आधार पर

Created by Universal Document Converter

म.प्र. लोक सेवा आयोग की प्रिलिम्स परीक्षा की तैयारी हेतु कोचिंग करने का अवसर भी प्राप्त होगा।

विद्यार्थियों के चतुर्मुखी सर्वांगीण विकास, एवं लौकिक, आगमिक, आध्यात्मिक और न्यायशास्त्र का विशेष ज्ञान कराने के लिए कॉलेज के अध्यापकों के अतिरिक्त श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में भी अनेक विशिष्ट विद्वान आवश्यकतानुसार अध्यापन कार्य कराते हैं।

इन विद्यार्थियों को भोजन, आवास, शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य चिकित्सा आदि सभी प्रकार की सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के अन्तर्गत पूरे वर्ष अनेक सह-शैक्षणिक एवं अन्य गतिविधियाँ, जैसे, साप्ताहिक गोष्ठी, प्रवचन-प्रशिक्षण, साहित्यिक प्रतियोगिताएँ, धार्मिक विधि-विधान, संगीतमय भजन-भक्ति, शैक्षणिक भ्रमण, खेलकूद, योगा-व्यायाम आदि कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

विद्यार्थियों को धार्मिक वातावरण के साथ-साथ पारिवारिक वातावरण भी भरपूर मिलता है, क्योंकि हम सब एक परिवार की तरह ही रहते हैं कोई भी विद्यार्थी यहाँ परदेश जैसा अनुभव नहीं करता। विद्यार्थीगण विद्वानों के अनुशासन-प्रशासन में रहते हुए भी उनसे पारिवारिक स्नेह पाकर सदैव प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन के सप्रेम भेंटकर्ता

1. गुप्तदान	11000/-
2. श्री कमलजी बोहरा, कोटा	2100/-
3. श्री विवेकजी शास्त्री, गौरझामर	1100/-

Created by Universal Document Converter

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
	प्रथम पुष्प	
1.	सच्चे जिनवर सच्चे...	9
2.	जिनशासन बड़ा निराला...	10
3.	धन्य मुनिराज हमारे हैं...	11
4.	मैं रागी बनूँगा ना मैं द्वेषी बनूँगा...	12
5.	मैं चेतन हूँ जड़ पुद्गल से भिन्न...	13
6.	जिनेन्द्र मूरत में हमने देखा...	14
7.	शुद्धातम चेतन हूँ...	15
8.	मोक्ष के प्रेमी हमने...	16
	द्वितीय पुष्प	
9.	बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना...	17
10.	ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...	18
11.	जब मुनिवर आते हैं, वैराग्य जगाते हैं...	19
12.	स्वर्ग से सुन्दर जिनवर का दरबार...	20
13.	अपना करना हो कल्याण...	21
14.	मेरी मैली परिणति नाथ...	22
15.	घर में ही वैरागी भरतजी...	23
16.	समयसार समयसार महाग्रन्थ समयसार...	24
17.	ज्ञान ध्वनि	25
	तृतीय पुष्प	
18.	कोई न दे सकता है इस जग में किसी का साथ...	26
19.	जिनको जिनधर्म सुहाया...	27
20.	ये प्रण है हमारा...	28
21.	अंतर में सिद्धों की महिमा सुहायी...	29
22.	सर्वज्ञ के वचन सदा जयवंत रहेंगे...	30

Created by Universal Document Converter

चतुर्थ पुष्प

23.	स्वयमेव इस जगत का सब काम हो रहा है...	31
24.	आये श्रद्धा में भगवान आज मैं धन्य हुआ...	32
25.	गुरुओं के उपकार को हरगिज भुला सकते नहीं...	33
26.	बंधनों में मुक्त को स्वीकार करता हूँ...	34
27.	जो भव से तिर गये वो लोग और थे...	35

पंचम पुष्प

28.	हे कुन्दकुन्द आपने सच्चा पथ दिखा दिया...	36
29.	अनुभव के हिमगिरी से बहती है ज्ञानधारा...	37
30.	ना ये राग होगा ना रागी रहेंगे...	38
31.	कण कण में हैं भगवान...	39
32.	ज्ञानस्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे...	40

Created by Universal Document Converter

(1)

सच्चे जिनवर सच्चे, सारे जग के जाननहारे...

अन्तर्मुख रहते हो भगवन फिर भी तारनहारे
सच्चे जिनवर सच्चे.........

तुम ना किसी को कुछ देते हो, बिन मांगे मिल जाता है
इन्द्रादिक चक्री का पद भी सहज उसे मिल जाता है
बिन माँगे ही मुक्ति देते, ऐसे देवनहारे
सच्चे जिनवर सच्चे.........

द्रव्य और गुण पर्यायों से जो भी तुमको ध्याता है
मोह भाव का नाश करे वह निज स्वरूप पा जाता है
भव रोगों से मुक्ति देते ऐसे पालनहारे
सच्चे जिनवर सच्चे.........

तीन लोक तीनों कालों के तुम तो ज्ञाता दृष्टा हो
लेकिन छह द्रव्यों में नहिं तुम अणु मात्र के सृष्टा हो
कर्ता धर्ता नहीं जगत के फिर भी हो रखवारे
सच्चे जिनवर सच्चे.........

Created by Universal Document Converter

(2)

जिन शासन बड़ा निराला मानो अमृत का प्याला

सभी द्रव्य हैं भिन्न-भिन्न, निर्भार हमें कर डाला रे।।
जिन शासन बड़ा निराला...

मोह उदय से जग के प्राणी, चतुर्गति भरमायें
कर्मोदय से भिन्न आत्मा, कुन्दकुन्द फरमायें।
मुनिराजों ने खोल दिया, मानो मुक्ति का ताला रे।।1।।
जिन शासन बड़ा निराला...

वीतरागी हैं देव हमारे, उनसे हम क्या माँगें
रत्नत्रय के आगे स्वर्गों का वैभव भी त्यागें।
सारी दुनिया में नहीं देखा, तुमसा देने वाला रे।।2।।
जिन शासन बड़ा निराला...

पंचम काल लगा भारी, अध्यात्म की नदियाँ सूख गईं।
प्राणों की कीमत देने पर, जिनवाणी लिपिबद्ध हुई।
मुनिराजों ने तीर्थंकर का, विरह भुला ही डाला रे।।3।।

आओ हम उन ऋषि मुनियों का, ऋण ये आज चुकायें।
तत्त्वज्ञान का अमृत पीकर, अपनी प्यास बुझायें।
काल अनंत हमें कोई फिर, दुखी न करने वाला रे।।4।।
जिन शासन बड़ा निराला...

Created by Universal Document Converter

(3)

धन्य मुनिराज हमारे हैं, हमें प्राणों से प्यारे हैं।। टेक।।

धन्य मुनिराज की मुद्रा, धन्य मुनिराज की निद्रा।
धन्य मुनिराज की चर्या, धन्य मुनिराज की चर्चा।।
धन्य मुनिराज की समता, धन्य मुनिराज की क्षमता।।1।।
धन्य मुनिराज हमारे हैं...

धन्य मुनिराज की गुप्ति, धन्य संसार से विरक्ति।
धन्य मुनिराज की भक्ति, धन्य मुनिराज की शक्ति।।
धन्य मुनिराज का वैभव, धन्य मुनिराज का गौरव।।2।।
धन्य मुनिराज हमारे हैं...

धन्य मुनिराज का आहार, धन्य मुनिराज का विहार।
धन्य मुनिराज का संयम, धन्य मुनिराज का उद्यम।।
धन्य मुनिराज का अध्ययन, धन्य मुनिराज का चिंतन।।3।।
धन्य मुनिराज हमारे हैं...

धन्य मुनिराज का संदेश, धन्य मुनिराज का उपदेश।
धन्य मुनिराज की दृष्टि, धन्य आनंद की वृष्टि।।
धन्य मुनिराज का जीवन, है शत शत बार उन्हें वंदन।।4।।
धन्य मुनिराज हमारे हैं...

Created by Universal Document Converter

(4)

मैं रागी बनूँगा न, मैं द्वेषी बनूँगा।

भगवान की संतान हूँ, भगवान बनूँगा।। टेक।।

इस मोह भाव ने मुझे, संसार भ्रमाया।
विपरीत मान्यता से, मैं दुक्ख ही पाया।।
और व्यर्थ में ही यूं अनंत काल गँवाया।।
संसार में फिर से नहीं, मैं जन्म धरूँगा।।1 ।।
भगवान की संतान हूँ...

अज्ञानता से मैंने, जिस वस्तु को जाना।
एकत्व और ममत्व से, अपना उसे माना।
जो जानने के योग्य था, बस वो ही न जाना।।
अब भेदज्ञान पूर्वक, आत्मज्ञान करूँगा।।2 ।।
भगवान की संतान हूँ...

व्रत शील और संयम, बाहर से ही किये।
इच्छा निरोध के कभी, प्रयास न किये।
और पाप छोड़ पुण्य में, संतुष्ट ही रहे।।
मैं तो विकार से भी, भेदज्ञान करूँगा।।3 ।।
भगवान की संतान हूँ...

Created by Universal Document Converter

(5)

मैं चेतन हूँ जड़ पुद्‌गल से भिन्न सदा ही रहता हूँ

शुभ और अशुभ तो दूर रहो पर्याय से भी भिन्न रहता हूँ

मेरा ज्ञान अनंत है जिसमें, स्पष्ट झलकते ज्ञेय सभी,
लेकिन ज्ञेय ना मुझमें आते, मैं ना समाता उनमें कभी-2
फिर भी मैं सब कुछ जानूँ और ज्ञानानन्द में रहता हूँ
शुभ और अशुभ.............

भाव शुभाशुभ पल-पल होकर मुझको छलते रहते हैं,
किन्तु स्वभाव से भिन्न सदा वो ऊपर-ऊपर तिरते हैं-2
जैसे जल में तेल जुदा है वैसे जुदा मैं रहता हूँ,
शुभ और अशुभ.............

पर्यायें आती जाती हैं, पर मेरी ध्रुवता ना जाये,
पर्यायों में रहकर भी मुझसे मेरी प्रभुता ना जाये-2
पर्यायों से भी पार सदा मैं अपने में ध्रुव रहता हूँ
शुभ और अशुभ.............

Created by Universal Document Converter

(6)

जिनेन्द्र मूरत में हमने देखा,
स्वयं की सूरत झलक रही है
लिया जो अनुभव में हमने उनको
सहज में दृष्टि सुलझ रही है।
जिनेन्द्र मूरत...

भले ही सारा ये जग निहारें,
वो किन्तु स्व में ही स्व निहारें
लिया जो श्रद्धा में हमने उनको
कली रतनत्रय की खिल रही है
जिनेन्द्र मूरत...

हैं वीतरागी प्रभु हमारे,
उन्हीं के चरणों में सिर हमारे
लिया जो भक्ति में हमने उनको
विपत्तियाँ सारी टल रही हैं
जिनेन्द्र मूरत...

सुनी देशना प्रभु तुम्हारी,
क्रमबद्ध हो गयी मति हमारी।
होना है जो वो निश्चित ही होगा,
कर्तृत्व हिमगिरी पिघल रही है।
जिनेन्द्र मूरत...

Created by Universal Document Converter

(7)

शुद्धातम चेतन हूँ इस जग से न्यारा हूँ

मैं नित्य निरंजन हूँ सब जाननहारा हूँ

मैं ज्ञाता दृष्टा हूँ चेतन चिद्रूपी हूँ
गुण ज्ञान अनंत सहित मैं सिद्ध स्वरूपी हूँ
मैं अमल अखंड अतुल अविकल अविनाशी हूँ
अविकारी अजर अमर निज ज्योति प्रकाशी हूँ
रागादिक भाव मलिन में तो उजियारा हूँ।।
मैं नित्य निरंजन हूँ....

मैं ज्ञानानन्दमयी अविकल अविनाशी हूँ
चैतन्यस्वरूपी हूँ परद्रव्य अभावी हूँ
परभावों में पड़कर मैं निज को भूल गया
पुद्गल की संपत्ति पा निज के प्रतिकूल गया
अब अपने को लख लूँ मुनिगण का प्यारा हूँ।
मैं नित्य निरंजन हूँ....

है संग अचेतन का भव भव में भटका हूँ
पुद्गल का रूप धरे चहुँगति में अटका हूँ
शुभ अशुभ विभाव किये आस्रव को अपनाया।
संवर से दूर रहा, भव भव में दुख पाया।
चौरासी लाख भटक थक थक के हारा हूँ। मैं नित्य निरंजन हूँ....

मिथ्यात्व महातम की छायी बदरी कारी
समकित की किरणों से आयेगी उजियारी
रतनत्रय धारूँ तो अंतर उजियारा हो
भव बंधन कट जायें दुःख से छुटकारा हो
ज्योति झिलमिल चमके मैं अनुपम तारा हूँ। मैं नित्य निरंजन हूँ....

Created by Universal Document Converter

(8)

मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे।

मखमल पर सोने वाले, भूमि पर चलते देखे।।

सरसों का भी एक दाना, जिनके तन में चुभता था।
काया की सुध छोड़ी, गीदड़ तन खाते देखे॥
मोक्ष......

ऐसे श्री पारस स्वामी, तदभव थे मोक्षगामी।
कर्मों ने नाहीं बख्शा, पत्थर तक गिरते देखे।।
मोक्ष......

सेठो में सेठ सुदर्शन, कामी रानी का बंधन।
शील को नाहीं छोड़ा, सूली पर चढ़ते देखे।।
मोक्ष......

ऐसे निकलंक स्वामी अध्ययन करने की ठानी।
जिनशासन नाहीं छोड़ा मस्तक तक कटते देखे।।
मोक्ष......

भोगों को अब तो त्यागो जागो चेतन अब जागो
आशा ना पूरी होती मरघट तक जाते देखे
मोक्ष......

अर्जुन व भीम जिनके बल का ना पार था
आतम उन्नति के कारण अग्नि में जलते देखे।
मोक्ष......

Created by Universal Document Converter

(९)

भले रूठ जाये ये सारा जमाना,
नहीं रागियों की शरण में है जाना॥
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना
ये श्रद्धान मेरा है मेरु समाना,
नहीं रागियों की शरण में है जाना॥
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना...

मेरे ज्ञान और ध्यान में बस तुम्हीं हो,
अटल मेरे श्रद्धान में बस तुम्हीं हो।
नहीं लाज गौरव, ना भय मुझको खाना,
नहीं रागियों की शरण में है जाना॥
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना...

तुम्हीं से मुझे मुक्तिमार्ग मिला है,
रत्नत्रय का सुन्दर चमन ये खिला है।
ना तीर्थंकरों के कुल को लजाना,
नहीं रागियों की शरण में है जाना॥
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना...

मैं हूँ मात्र ज्ञायक ये अनुभव में जाना,
तिहुँ लोक में बस उपादेय माना।
ये गुरुओं का ऋण है मुझे जो चुकाना
नहीं रागियों की शरण में है जाना॥
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना...

है आदर्श अकलंक गुरुवर हमारे,
हैं निकलंक हम सबको प्राणों से प्यारे।

Created by Universal Document Converter

धर्म के लिये जिनने मस्तक कटाया
नहीं जैन कुल को उन्होंने लजाया
उसी मार्ग पर हमको चलके दिखाना
नहीं रागियों की शरण में है जाना॥
बस इक वीतरागी को सिर है झुकाना...

(10)

ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया,

मिथ्याभ्रम का अन्धेरा विलय हो गया, ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...

दृष्टि एकान्त की ही बनी थी मेरी, और अनेकान्त से बेखबर मैं रहा
स्याद्वादी सहज हो गया,
ज्ञान में ज्ञान का ज्ञान अब हो गया॥ 1 ॥
ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...

माना अपना उसे जो ना अपना हुआ,जो था अपना उसी से पराया रहा
भेदविज्ञान अब हो गया,
एक अभेद की धारा में, मैं बह गया॥ 2 ॥
ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...

वीतरागी प्रभु, वीतरागी गुरु, मोक्ष की मानो, तैयारी हो गयी शुरू
धन्य नरभव, मेरा हो गया,
राग जाने न जाने कहाँ खो गया॥ 3 ॥
ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...

दृष्टि में आतमा भक्ति परमात्मा, ऐसी आराधना होऊँ सिद्धात्मा,
मार्ग ऐसा मुझे मिल गया
मानो भव के भ्रमण का हरण हो गया॥ 4 ॥
ज्ञान सम्यक् मेरा हो गया...

Created by Universal Document Converter

(11)

जब मुनिवर आते हैं, वैराग्य जगाते हैं।

परद्रव्यों से हमको वो भिन्न बताते हैं,
परभावों से हमको वो भिन्न बताते हैं॥

मुनिराज रहें वन में, नहिं राग करें तन में।
बारह भावना रहे, बस जिनके चिंतन में।
सिद्धों जैसा बनने, का मार्ग बताते हैं॥
परद्रव्यों से हमको वो भिन्न बताते हैं,
परभावों से हमको वो भिन्न बताते हैं॥ 1 ॥

नहिं विषयों की आशा, बोलें हित-मित भाषा।
परिग्रह से दूर रहें, नहिं रखते अभिलाषा।
समता और शान्ति का, वो पाठ पढ़ाते हैं॥
परद्रव्यों से हमको वो भिन्न बताते हैं,
परभावों से हमको वो भिन्न बताते हैं॥ 2 ॥

अरि मित्र अरु महल मसान, निंदक या स्तुतिवान।
कोई अर्घ्य उतारनवान, कोई असि से करे प्रहार।
प्रत्येक स्थिति में समभाव बढ़ाते हैं॥
परद्रव्यों से हमको वो भिन्न बताते हैं,
परभावों से हमको वो भिन्न बताते हैं॥ 3 ॥

कर भव्यों पर करुणा करते श्रुत की रचना।
और अशुभ भाव से वो बस चाहतें हैं बचना।
शुद्धोपयोग का ही, पुरुषार्थ बढ़ाते हैं॥
परद्रव्यों से हमको वो भिन्न बताते हैं,
परभावों से हमको वो भिन्न बताते हैं॥ 4 ।।

Created by Universal Document Converter

(12)

स्वर्ग से सुंदर अनुपम है ये जिनवर का दरबार।

श्रद्धा से जो ध्याता निश्चित हो जाता भव पार,
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा॥ टेक॥

कभी न टूटे श्रद्धा, तुम पर भगवान हमारी।
झुक जाएंगी जीवन, में प्रतिकूलता सारी।।
है विश्वास हमारा, इक दिन छूटेगा संसार।
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा।। 1॥

निर्वान्छिक है भगवन, ये आराधना हमारी।
होवे दशा हमारी, बस जैसी हुई तुम्हारी।।
रत्नत्रय का मार्ग चलेंगे, पाएँ मुक्तिद्वार।
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा।। 2॥

स्याद्वाद वाणी ही, भ्रम का अज्ञान मिटाए।
निज गुण पर्यायें ही, अपना परिवार बताए।।
ना भूलेंगे मुनिराजों का, ये अनंत उपकार।
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा।। 3॥

लोकालोक झलकते, कैवल्यज्ञान है पाया।
फिर भी शुद्धातम ही, बस उपादेय बतलाया॥
मानो आज मिला मुझको, ये द्वादशांग का सार॥
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा।। 4॥

Created by Universal Document Converter

(13)

अपना करना हो कल्याण,

साँचे गुरुवर को पहिचान।

जिनकी वाणी में अमृत बरसता है।।

अपना करना हो कल्याण...

रहते शुद्धातम में लीन,

जो हैं विषय-कषाय विहीन।

जिनके ज्ञान में ज्ञायक झलकता है।।1।।

अपना करना हो कल्याण...

जिनकी वीतराग छवि प्यारी,

मिथ्यातिमिर मिटावनहारी।

जिनके चरणों में चक्री भी झुकता है।।2।।

अपना करना हो कल्याण...

पाकर ऐसे गुरु का संग,

ध्यावो ज्ञायक रूप असंग।।

निज के आश्रय से ही शिव मिलता है।।3।।

अपना करना हो कल्याण...

अनुभव करो ज्ञान में ज्ञान,

होवे ध्येय रूप का ध्यान।

फेरा भव-भव का ऐसे ही मिटता है।4।।

अपना करना हो कल्याण...

Created by Universal Document Converter

(14)

मेरी मैली परिणति नाथ कब निर्मल होगी।

कब पर सन्मुखता त्याग स्व सन्मुख होगी।।

काल अनादि से भववासी, भ्रमता आया लख चौरासी।
यह भव दुखदायी चाल मंगलमय होगी।
मेरी मैली परिणति नाथ.....

आपा पर का भेद न जाना, रतनत्रय निधि ना पहिचाना।
कब धर जैनागमसार समकितमय होगी।
मेरी मैली परिणति नाथ...

पाँच समिति और पंच महाव्रत, षट् आवश्यक सात शेषधर।
तज अक्ष विषय विष पाँच, मुनि बन शुद्ध होगी।
मेरी मैली परिणति नाथ...

अंतर बाहर परिग्रह त्यागूँ, द्वादश विधि तप को आचारूँ।
कब धर निज ध्रुव का ध्यान, ध्रुवमय ही होगी।
मेरी मैली परिणति नाथ...

तेरा ज्ञानामृत रस पीकर, काल अनादि का जहर घुलाकर।
कब अनंत काल को नाथ आनंदमय होगी।
मेरी मैली परिणति नाथ...

छोड़ जगत की आश वास सब, तेरी शरणा गही नाथ अब।
कर नेम प्राप्त ध्वनिसार, तन्मय ही होगी।
मेरी मैली परिणति नाथ...

Created by Universal Document Converter

(15)

घर में ही वैरागी भरतजी घर में ही वैरागी

जड़ वैभव से भिन्न स्वयं में निज वैभव अनुरागी।
घर में ही वैरागी भरतजी ॥

छह खंडों को तुमने जीता, ये कहने में आया।
लेकिन जग की विजय में उनने, खुद को हारा पाया।
भोर भयी समकित की अंतर रैन मोह की भागी।
घर में ही वैरागी भरतजी ॥1 ॥

धन्य-धन्य हैं लोग वही जो, दिव्य ध्वनि सुन पाते।
किन्तु भरतजी छह खण्डों पर, विजय ध्वजा फहराते।
भाग्यवान कहे सारी दुनिया, पर समझें वो अभागी।
घर में ही वैरागी भरतजी ॥2 ॥

चक्रवर्ती थे छह खण्डों के, पर अखण्ड अन्तर में।
बाहर से भोगी दिखते, पर योगी अभ्यन्तर में।
चक्री पद भी नहीं सुहाये, शुद्धातम रुचि लागी।
घर में ही वैरागी भरतजी ॥3 ॥

भावलिंगी सन्तों की प्रतिदिन, भरत प्रतीक्षा करते।
नवधा भक्ति से पड़गाहन का, भाव हृदय में धरते।
हुए एक अन्तर्मुहूर्त में सारे जग के त्यागी।
घर में ही वैरागी भरतजी ॥4 ॥

Created by Universal Document Converter

(16)

ज्ञायक उसके लक्ष्य में आवे, जो पढ़ ले इकबार,

समयसार-समयसार महाग्रन्थ समयसार ॥
कुन्दकुन्द मुनि के चरणों में वंदन बारम्बार
समयसार-समयसार................ ।।

काम भोग बन्धन की कथा तो सबको सहज सुलभ है।
पर से भिन्न एकत्वभाव की उपलब्धि दुर्लभ है।
दुर्लभ सहज सुलभ हो जावे, ऐसा चमत्कार ॥1 ॥
समयसार-समयसार................ ।।

कौतुहली निजातम का मरकर भी तुम हो जाना
और पड़ौसी बनकर पर का आतम अनुभव लाना
परद्रव्यों से भिन्न त्रिकाली जब अनुभव में आयेगा
शरीरादि पुद्गल द्रव्यों का सर्व विमोह पलायेगा
ऐसा निर्मल भेदज्ञान ही आत्मख्याति का सार2 ॥
समयसार-समयसार................ ।।

जैसे लोह समान स्वर्ण की बेड़ी भी है बाँधती,
वैसे ही शुभ-अशुभ कर्म की दोनों बेड़ी बाँधती।
पुण्य भला है पाप बुरा है अज्ञानी ये मानता,
लेकिन इनमें कोई ना अन्तर सम्यग्ज्ञानी जानता।
नवतत्त्वों में छुपा हुआ है ऐसा जाननहार ॥3 ॥
समयसार-समयसार................ ।।

धन का अर्थि जैसे जग में राजा की सेवा करे
चले उसी की आज्ञा में और रुचिपूर्वक श्रद्धा करे
यदि चाहिये मोक्ष तुम्हें तो जीवराज को जानिये
करो लीनता उसमें ही और श्रद्धा से पहिचानिये
अशरीरी होने का मानो स्वप्न हुआ साकार।।4 ॥
समयसार-समयसार................ ।।

Created by Universal Document Converter

(17)

ज्ञान ध्वनि...

हे ज्ञान हे ज्ञान हे ज्ञान हे ज्ञान

बंध से छुड़ाता मुक्ति दिलाता–2
हमसे तुम्हारा तादात्म्य नाता–2
सारे जग को तू ही जान
हे ज्ञान हे ज्ञान–2

तेरे ही सहारे जग से हों न्यारे–2
कर्तापन का भार उतारे–2
हो जाये भेदज्ञान
हे ज्ञान हे ज्ञान–2

सब का ज्ञाता निज में समाता–2
शुद्धातम को लक्ष्य बनाता–2
होवे सम्यग्ज्ञान
हे ज्ञान हे ज्ञान–2

Created by Universal Document Converter

(18)

कोई ना दे सकता है इस जग में किसी का साथ।

इसीलिए प्रभु रख लिए तुमने हाथों पे हाथ।। टेक।।

तुमने बतलाया प्रभुवर हर जीव स्वयं का नाथ।

इसीलिए प्रभु....... ।।

वीतराग भावों से जिनवर तुमने जगत निहारा है।
अंतर में अपने चैतन्य प्रभु का लिया सहारा है।।
हो धन्य आप हे जिनवर, छोड़े सब पुण्य अरु पाप।।
इसीलिए प्रभु रख लिए.................. ।।1 ।।

सुना है शरणागत भव्यों को मुक्तिमार्ग दिखलाते हो।
अकर्तृत्व ज्ञायक स्वभाव की निर्मल दृष्टि कराते हो।।
निज की मुक्ति का निज में ही होता है पुरुषार्थ
इसीलिए प्रभु रख लिए.................. ।।2 ।।

आराधक के जीवन में शुभभाव सहज ही आता है।
बचूँ शुभाशुभ भावों से बस यही भावना भाता है।।
हूँ स्वयं पूर्ण अपने में, बस एक यही परमार्थ।।
इसीलिए प्रभु रख लिए.................. ।।3 ।।

विषयों की अभिलाषा ले जो शरण आपकी आते हैं।
वीतराग मुद्रा लख कर वो निर्वांछक हो जाते हैं।।
भिक्षा लेने आते हैं और दीक्षा लेके जाते हैं।
अपनी प्रभुता अपने में प्रगटे अपने ही आप।।
इसीलिए प्रभु रख लिए.................. ।।4 ।।

Created by Universal Document Converter

(19)

जिनको जिनधर्म सुहाया जिनराज हो गए

वो तीन लोक के देखो सिरताज हो गए

जिनको..............

निज साधन से निज साधक को, जिनने साध्य बनाया।
जंगल में मंगल स्वरूप निज आत्म तत्त्व को ध्याया।।
वो धरके दिगंबर चोला, मुनिराज हो गए।।
जिनको जिनधर्म सुहाया.......... ।।1 ।।

समयसार दर्पण में जिनको जाननहार जनाया।
फिर प्रमत्त अप्रमत्त दशा से खुद को भिन्न लखाया।।
जो पड़े अधूरे मानों, सब काज हो गए।।
जिनको जिनधर्म.......... ।।2 ।।

अनेकांत की छाया में मुझे अनेकांत दिखलाया।
रहकर स्वयं अकर्ता मुझको अकर्तृत्व समझाया।।
वो बिन बोले दिव्यध्वनि की आवाज हो गए।।
जिनको जिनधर्म.......... ।।3 ।।

अहो प्रयोजनभूत तत्त्व जब से दृष्टि में आया।
चक्रवर्ती और इंद्र संपदा को असार है पाया।।
वो खेल-खेल में तारण तरण जिहाज हो गए।।
जिनको जिनधर्म.......... ।।4 ।।

क्रोध भाव से भिन्न निहारा क्षमा भाव प्रगटाया।
द्रव्य दृष्टि से देखा तो परमात्मपना ही पाया।।
जिनशासन का वो राज कर महाराज हो गए।।
जिनको जिन धर्म.......... ।।5 ।।

Created by Universal Document Converter

(20)

ये प्रण है हमारा ना जन्में दोबारा,

क्योंकि विषयों में आनंद हमको आता नहीं,
अरे इस झूठे जग में रहना हमको भाता नहीं।

जिन जिन संयोगों में हमने अपनापन दिखलाया ,
भ्रम बुद्धि से हमने खुद अपना संसार बढ़ाया
भव-भव से हो छुटकारा, संकल्प हमारा
क्योंकि.............

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव से मैं इस जग से न्यारा
छह द्रव्यों से भिन्न चाल है मेरा रूप निराला
चैतन्य प्रभु हमारा, हमने जब से निहारा
तब से विषयों में आनंद हमको आता नहीं
अरे इस..........

धन्य धन्य हैं कुंद कुंद जो समयसार दिखलाया
अमृतचंद्र गुरु उपकारी हमको भगवान बताया
निर्ग्रंथ मार्ग है प्यारा लेंगे उसका सहारा
क्योंकि विषयों में आनंद हमको आता नहीं
अरे.............

ग्रहण किया प्रज्ञा से मैं चेतक ही हूँ यह जाना
अन्य सभी परभाव भिन्न मुझसे से ये मैंने माना
प्रज्ञा से ही भेद और प्रज्ञा से ग्रहण बताया
भेदों में भी इक अभेद दृष्टि में आज समाया
निज में निज की प्रभुता को जबसे हमने स्वीकारा
तब से विषयों में आनंद हमको आता नहीं
अरे...........

Created by Universal Document Converter

(21)

अंतर में सिद्धों की महिमा समायी,

बधाई हो बधाई चेतन तुमको बधाई।
परमात्म अपना देता दिखाई,
बधाई हो बधाई चेतन तुमको बधाई।।

कहने को सिद्धालय वासी, किन्तु आप तो ज्ञान निवासी
राग-द्वेष बिन निर्विकल्प, ज्ञान दृष्टि से हो सविकल्प
दृष्टि अनेकांत की उपजाई,
बधाई हो बधाई चेतन तुमको बधाई।।

एक सिद्ध में सिद्ध अनंत, गुण पर्याय अनंतानंत
सबकी सत्ता न्यारी न्यारी, प्रगटायो अवगाहन भारी
कण-कण की स्वाधीनता चित्त भायी,
बधाई हो बधाई चेतन तुमको बधाई।।

अन्तिम पौरुष मोक्ष को साधा, भव बंधन की मिट गई बाधा
नयातीत पद तुमने पाया, नय विकल्प का भेद मिटाया
ज्ञान मात्र सत्ता अनुभव में आई,
बधाई हो बधाई चेतन तुमको बधाई।।

अगुरुलघु गुण को प्रगटाया, सिद्ध सुकुल प्रभुवर ने पाया
अंतर में समभाव जगाया, गोत्र कर्म समूल नशाया
प्रभुता में गुरुता लघुता ना पायी,
बधाई हो बधाई चेतन तुमको बधाई।।

Created by Universal Document Converter

(22)

सर्वज्ञ के वचन सदा जयवंत रहेंगे,
इस काल में सदा ही जैन संत रहेंगे।
जिनधर्म अंत तक वही जीवंत रखेंगे
इस काल में सदा ही.......

प्रतिकूलताओं में भी समता भाव संभारा
जिनने सदा स्वयं को अकर्ता ही निहारा
निश्चित ही एक दिन वो भव का अंत करेंगे
इस काल में सदा ही........

चारित्र ही बस धर्म है ये पाठ पढ़ाते
बस मोक्षमार्ग में ही अपने चरण बढ़ाते
उपसर्ग परिसह में भी निष्कंप रहेंगे
इस काल में सदा ही......

गौरव हैं जैन धर्म के मुनिराज हमारे
जो बंधनों में भी स्वयं को मुक्त निहारें
वो तत्त्व के अभ्यास में निशंक रहेंगे
इस काल में सदा ही.....

जो माने मुनि को वही तो पुण्य आत्मा
जो जाने मुनि का स्वरूप भव्य आत्मा
परद्रव्य भाव त्याग के निर्ग्रंथ रहेंगे
इस काल में सदा ही......

करते त्रिकाल वंदना वनवासी संत की
अनियत विहारी हैं सदा महिमा महंत की
जो नंत काल मुक्तिरमाकंत रहेंगे
इस काल में सदा ही....

Created by Universal Document Converter

(23)

स्वयमेव इस जगत का सब काम हो रहा है।
हमको भी धीरे धीरे श्रद्धान हो रहा है।। टेक।।

करने को जड़ का कार्य, तुझे जड़ ही होना होगा,
अज्ञान मे ही अब तक, अज्ञान को ही भोगा।
जो होने योग्य होता, बस वो ही हो रहा है।।1।।

ज्यों स्वर्ण भाव में से, नहिं लोह भाव होवे,
त्यों ज्ञान भाव में से, बस ज्ञान भाव होवे।
कर्तृत्व का ये बोझा, अब तो उतर रहा है।।2।।

केवलि स्वयं भी अपनी, पर्यायों के हैं कर्ता,
पर फेरफार उनके, करने में हैं अकर्ता।
ज्ञातृत्व भाव में ही, आनंद हो रहा है।।3।।

हे सिद्धराज तुमने, पाई दशा है जैसी,
संकल्प है ये मेरा, मैं भी धरूँगा वैसी।
अब स्वयं का स्वयं में विश्राम हो रहा है।।4।।

रागी ने वीतरागी, को राग से ही जाना,
ज्ञाता स्वरूप उनका, नाही कभी पिछाना।
कण-कण स्वतंत्र अपनी, सत्ता में सो रहा है।।5।।

Created by Universal Document Converter

(24)

आये श्रद्धा में भगवान, आज मैं धन्य हुआ

अनुभव में आतम राम, आज मैं धन्य हुआ
धन्य हुआ–2, धन्य हुआ–2
मुझे इस जग से क्या काम, आज मैं धन्य हुआ

तेरी अस्ति मेरी बस्ती, मेरी अस्ति तेरी बस्ती
ऐसी करूँ प्रभु की भक्ति, आज लगा दूँ सारी शक्ति
निज में पाया विश्राम, आज मैं धन्य हुआ।

सुरपति जिनको करते वन्दन, जो हैं सिद्धों के लघुनन्दन
निज स्वभाव के हैं अभिलाषी, मुक्ति पुरी के हैं प्रत्याशी
मिला सुख से भरा गोदाम आज मैं धन्य हुआ।

कण कण को जी भर भर देखा, पाया नहीं मैं सुख की रेखा
हे जिनवर जब तुम्हें निहारा, समता रस की बह गई धारा
भव भ्रमण पे लगा विराम, आज मैं धन्य हुआ।

समकित का संगीत सुहाया, साधन साध्य स्वयं में पाया।
तुम जैसा भगवंत मिला है, मुक्तिपुरी का पंथ मिला है।
शुद्धात्म लिया पहिचान, आज मैं धन्य हुआ।

वीतरागता की ये मस्ति, नहीं समझना इसको सस्ती।
ज्ञायक भाव की अदभुत मस्ति, नहीं समझना इसको सस्ती
मैं भी हूँ सिद्ध समान, आज मैं धन्य हुआ।

Created by Universal Document Converter

(25)

गुरुओं के उपकार को हरगिज भुला सकते नहीं

तन भुला सकते हैं पर चेतन भुला सकते नहीं
गुरुओं के.............

श्रुत का श्रवण और पठन पाठन जीव को हितकार है
जिसके हृदय में आ बसे बस वो जगत का ताज है-2
प्राण देकर भी कभी कीमत चुका सकते नहीं
गुरुओं के.............

है अनन्त उपकार उनका जो ये वाणी दे गये
हम भी बनें भगवान हममें बीज ऐसे बो गये-2
अहो वचनातीत को वचनों में ला सकते नहीं
गुरुओं के.............

केवली श्रुतकेवली भणिदं ये तीर्थ अपार है
चैतन्य प्रभु ही मात्र उस, संपूर्ण श्रुत का सार है-2
श्रवण बिन भव भ्रमण का फेरा मिटा सकते नहीं।
गुरुओं के.............

संपूर्ण पृथ्वी पत्र हो चाहे वनस्पति कलम हो
लवण से लेकर स्वयंभूरमण स्याही परम हो-भले स्याही परम हो।
सामर्थ्य हम असमर्थ शब्दों में बता सकते नहीं।
गुरुओं के.............

जिनके सदा श्रद्धान ज्ञान चारित्र में है आत्मा
त्याग में अरू योग संवर में सदा शुद्धात्मा-है सदा शुद्धात्मा।
मेरू-सम श्रद्धान मुनिवर का डिगा सकते नहीं
गुरुओं के.............

Created by Universal Document Converter

(26)

बन्धनों में मुक्त को स्वीकार करता हूँ
अपने ज्ञायक भाव में विहार करता हूँ

धन्य थे सुकमाल मुनि जिन धैर्य को धारा
देह में रहते हुए निर्देही निहारा
ऐसी सम्यक् दृष्टि का सत्कार करता हूँ
अपने ज्ञायक भाव में विहार करता हूँ

मुक्त होने की कला गुरुओं ने समझाई
चल पड़े जो मार्ग पर उनने सहज पाई
भव भ्रमण का आज उपसंहार करता हूँ
अपने ज्ञायक भाव में विहार करता हूँ

धर्म का मंडन करें खंडन करें भ्रम का
मुक्त की आराधना, पुरुषार्थ मुक्ति का
अब तो सम्यक् रत्नों का शृंगार करता हूँ
अपने ज्ञायक भाव में विहार करता हूँ

चाहते हो भव दुःखों से मुक्त जो होना
तो हो अंगीकार बस श्रामण्य का होना
व्यक्त से अव्यक्त का निर्धार करता हूँ
अपने ज्ञायक भाव में विहार करता हूँ

Created by Universal Document Converter

(27)

जो भव से तिर गये वो लोग और थे

मुक्ति में जा बसे वो लोग और थे

मरते हैं लोग उम्र भर जीने की चाह में
जो अमर हो गये वो लोग और थे

हम सो रहे थे आज तक निद्रा में मोह की
हमको जगा गये वो लोग और थे

जड़ पर झुके अनादि से चैतन्य के लिए
जग को झुका गये वो लोग और थे

मिथ्यात्व की दशा में पत्थर हम बने रहे
पत्थर को मूर्ति कर गये वो लोग और थे

विग्रह में और परिग्रह में जीवन गँवा दिया
निर्ग्रन्थ हो गये वो लोग और थे

आडम्बरों का बोझ ये ढोने में जग लगा
जो हो गये दिगम्बर वो लोग और थे

कुटिया की जरूरत महलों की चाह की
जो देह को भी तज गये वो लोग और थे

मनमानी छोड़ के हमें जिनवाणी दे गये
अमृत पिला गये वो लोग और थे

मुझे दीन हीन पामर सारा ये जग कहे
पूछो ना मुझसे कोई कितने हैं दुख सहे
भगवान मुझको कह गये वो लोग और थे

Created by Universal Document Converter

(28)

हे कुन्दकुन्द आपने सच्चा पथ बता दिया

दृष्टि का विषय मेरी दृष्टि में बिठा दिया
हे कुन्दकुन्द...

शुद्धात्मा के ध्यान से मुक्ति मिले सदा
हूँ ज्ञान मात्र आत्मा पर भाव से जुदा
आराधना के काल में आराध्य बना दिया
हे कुन्दकुन्द...

मुक्ति में जो भी जायेंगे या आज तक गये
सम्यक्त्व का माहात्म्य है अब और क्या कहें
मेरे ही ब्रह्म भाव को बह्मा बना दिया
हे कुन्दकुन्द...

थी भूल एक मूल में पर्याय दृष्टि की
अहो द्रव्य दृष्टि की निधि मुझे आपसे मिली
भोगों की भीड़ में मुझे योगी दिखा दिया
हे कुन्दकुन्द...

हूँ धन्य धन्य आज मुझे समकित भवन मिला
जिसमें न कोई अप्रमत्त नाहीं प्रमत्त मिला
तिरोभाव कर विशेषों का सामान्य दिखा दिया
हे कुन्दकुन्द...

Created by Universal Document Converter

(29)

अनुभव के हिमगिरी से बहती है ज्ञान धारा

मिला एक ही प्रयोजन चारों ही वेद द्वारा

प्रथमानुयोग हमको शुभ-अशुभ फल बताये
सब पाप से छुड़ाकर निज धर्म में लगाये
जग की विचित्रता को हमने भी अब विचारा
अनुभव के हिमगिरी से...

करणानुयोग शैली परिणाम को बताये
विधि के विधान की विधि विधिपूर्वक बताये
सर्वज्ञ ने जो देखा, बस ज्यों का त्यों उचारा
अनुभव के हिमगिरी से...

चरणानुयोग धारा चलना हमें सिखाती
निश्चय स्वरूप पूर्वक उपचार को बताती
आवागमन हमें अब नहिं चाहिए दोबारा
अनुभव के हिमगिरी से...

द्रव्यानुयोग दृष्टि शुद्धात्म की कराये
गुण द्रव्य और पर्यय का भेद भी विलाये
ध्रुवता कभी न मरती पर्यय अमर न होवे
अस्तित्व गुण से चेतन जीवत्व नाहिं खोवे
हो जाये द्रव्य दृष्टि परमार्थ का सहारा
अनुभव के हिमगिरी से...

Created by Universal Document Converter

(30)

ना ये राग होगा ना रागी रहेंगे
सदा हम तो बस वीतरागी रहेंगे।

विकल्पों से मुक्ति सदा को मिलेगी
मेरी परिणति ज्ञानमय ही रहेगी।
विकारों के बिन निर्विकारी रहेंगे।
ना ये राग होगा...

महापुण्य से आपको नाथ पाया
मेरा नाथ मुझमें ही तुमने बताया
नहीं वेदना मोह की अब सहेंगे
ना ये राग होगा...

नहीं अंश जड़ का कोई मुझमें आया
ये अद्भुत रहस्य नहीं जान पाया
त्रिकाली ही थे हम त्रिकाली रहेंगे।
ना ये राग होगा...

अवस्थाओं में ही रहा मैं तो तन्मय
न जाना स्वयं मैं हूँ ध्रुव एक चिन्मय
है संकल्प अब द्रव्यदृष्टि धरेंगे
ना ये राग होगा...

मिलेगी अनाकुलता विषयों में भारी
रही मूढ़ता आज तक ये हमारी
नहीं आश अनुकूलता की रखेंगे
ना ये राग होगा...

Created by Universal Document Converter

(31)

कण कण में हैं भगवान तेरी महिमा बड़ी महान

धनि धन्य है केवलज्ञान तेरी महिमा बड़ी महान

तुम हो सारे जग के ज्ञाता, लेकिन जग से कोई ना नाता
हे वीतराग विज्ञान तेरी महिमा बड़ी महान

गुण अनंत पर्याय अनन्ता एक समय जानें भगवन्ता
जिनशासन की तू शान तेरी महिमा बड़ी महान

यदि भविष्य ना ज्ञान में आवे, कैसे वो फिर दिव्य कहावे
झलके वर्तमान समान तेरी महिमा बड़ी महान

दर्पण सम सब जाननहारे, स्वच्छ सदा निर्मल अविकारे
रहे शुद्धातम का ध्यान तेरी महिमा बड़ी महान

माला में मोती क्रम क्रम आवे, वैसे ही सारा जग परिणावे
देखा क्रमबद्ध जहान तेरी महिमा बड़ी महान

छुप छुप कर जो पाप कमावे, मूढ़ कभी ये जान ना पावे
सब देख रहे भगवान तेरी महिमा बड़ी महान

Created by Universal Document Converter

(32)

ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

समवशरण में देखो जिनवर फरमायें रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

ज्ञानी जग में दीखते नहीं ज्ञान जग माहिं
मगन विषय सुख में रहें ऐसा संभव नाहिं
शुद्ध त्रिकाली ध्रुवता दृष्टि में आये रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

पाप भाव को पाप तो जाने हैं सब लोय
पुण्य भाव भी पाप है जानें विरला कोय
पुण्य पाप दोनों में समभाव जगाये रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

फैलेगा उपयोग तो क्षीण ज्ञान धन होय
जो उपयोग समेटते केवलज्ञानी होय
एक समय में सारा लोकालोक समाये रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

प्राप्त करें वो शुद्धता जो शुद्धता लखायें
अनुभव करें अशुद्धता वो अशुद्धता पायें
कुन्द कुन्द हम सबको भगवान बतायें रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

सम्यक्‌विधि जो स्वयं को विधि से भिन्न लखायें
ज्ञान निधि उसको स्वयं ज्ञान माहिं झलकाये
ध्रुवता की प्रभुता का आनन्द आये रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे
समवशरण में देखो जिनवर फरमायें रे
ज्ञान स्वरूपी चेतन अनुभव में आये रे

Created by Universal Document Converter

शास्त्राभ्यास से तत्काल ही इतने गुण प्रगट होते हैं -

1. क्रोधादि कषायों की तो मंदता होती है।
2. पंचेन्द्रियों के विषयों में होनेवाली प्रवृत्ति रुकती है।
3. अति चंचल मन भी एकाग्र होता है।
4. हिंसादि पाँच पाप नहीं होते।
5. स्तोक (अल्प) ज्ञान होने पर भी त्रिलोक के तीन काल संबंधी चराचर पदार्थों का जानना होता है।
6. हेय-उपादेय की पहचान होती है।
7. आत्मज्ञान सन्मुख होता है। (ज्ञान आत्म-सन्मुख होता है।)
8. अधिक-अधिक ज्ञान होने पर आनन्द उत्पन्न होता है।
9. लोक में महिमा/यश विशेष होता है।
10. सातिशय पुण्य का बंध होता है।

इतने गुण तो शास्त्राभ्यास करने से तत्काल ही प्रगट होते हैं, इसलिए शास्त्राभ्यास अवश्य करना।

Created by Universal Document Converter

Created by Universal Document Converter